Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 5, June. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

'' आदिवासी भिलाली और बारेली बोलियों में ' वचन ' के अनुशीलन की आवश्यकता ''

रजनी सोलंकी

पी–एच. डी. शोधार्थी– देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर म.प्र. (भारत)

सारांशः

आदिवासी भिलाला एवं बारेला के द्वारा बोली जाने वाली बोलियों का अपना कोई लिखित साहित्य नहीं हैं। परन्तु उसकी अपनी वाचिक परम्परा रही हैं। आदिवासी भिलाला की भिलाली बारेला की बारेली बोलियों में मिठास हैं, अपनत्व हैं। भिलाला की उरपा भिलाली एवं ढापला भिलाली दोनो ही बोलियां बोलने एवं सुनने में भिन्न–भिन्न हैं। किन्तु इनके अधिकांश शब्द एक समान ही होते हैं। इसी प्रकार बारेली, राठ्वा बोली एवं बारला बोली सुनने एवं बोलने में तो अलग लगती हैं। किंतु उसके अधिकांश शब्द एक समान ही हैं। जबकि पाल्या बोली सुनने, बोलने में बारेली राठ्वा बोली एवं बारला बोली से बिल्कुल भिन्न है। इन बोलियों को बोलने वालो को हम कुछ सीमित क्षेत्र तक नहीं बांध सकते हैं। भिलाली एवं बारेली बोली में एकवचन एवं बहुवचन बनाने के कुछ नियम होते है, जो आधुनिकता के इस दौर में खत्म होने के द्वार पर हैं, जिसे संग्रह कर सुरक्षित रखना अतिआवश्यक है। यदि समय रहते हुए इन बोलियों को बचाया नहीं गया तो इन बोलियों के लुप्त होने की आंशका बनी रहेगीं।

प्रस्तावना :

आदिवासी जीवन एकक जीवन पद्धति हैं। जिसमें जीवन के सभी अंग आपस में जैविक रूप से संबधित हैं। मृतप्रायः हो रही भाषाओं व बोलियों के जीवन संघर्ष को अनुभूत करना आज प्रत्येक भाषा वैज्ञानिक के लिए आवश्यक हैं। भाषा जीवन जीने के सभी अंगो को मुखर करती हैं। आज केन्द्र सरकार की आदिवासी अकादमी जैसी संस्थाएँ आदिवासी भाषा के सरंक्षण व संवर्धन के प्रश्न पर सक्रीयता से विचार कर रही हैं। गाँव वाले लोक तथा गाँव के बाहर के अ–लोक के संदर्भ में आदिवासियों की भाषा के बारे में विचार करने का समय आ गया हैं। वर्तमान समय में कोई भी समुदाय एकक भाषिक समुदाय नहीं हैं। सामन्यतया आज प्रत्येक व्यक्ति द्वीभाषी या त्रिभाषी हैं। आदिवासी अंचल भी इस तथ्य से अलग नहीं हैं। लोक भाषा को लेकर कतिपय विचार प्रचलन में हैं। लोक और उनकी भाषा में कोई फर्क न ही होता हैं किंतु आज इस विचार को मान्य नहीं किया जा सकता हैं। एक ही गाँव में कई लोक भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। '' किसी भी संस्कृति का आधारभूत घटक उसकी भाषा होती हैं।'' और समाज प्रबोधन कर समाज का विकास कर भाषा को टिकाये रखना चाहिये।'' किसी एक काल में होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एवं व्यापकता में अपेक्षाकृत सीमित होते हैं। आज आदिवासी समाज पुराना वाला बंद व सीमित समाज नहीं रहा। यह शाश्वत सत्य हैं। इसलिए सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने के लिए भाषा का सरंक्षण अत्यंत आवश्यक हैं। इस बदले हुए परिवेश व परिस्थतियों में आदिवासी जगत को अपनी मौलिकता व विशेषता हो बचाये रखने की जंग लड़ना पड़ रही हैं। इस पहचान को बनाये रखने के पीछे उसका आज तक टिका हुआ सामाजिक आचार विचार का आग्रह हैं। विवाह, मृत्यु तथा जन्म आदि संस्कारों को वह आज भी उसी तरह से निभा रहा हैं। जैसा वह कई सहस्त्राब्दियों से करता आ रहा हैं।

आदिवासी मजदूर कहीं पर भी हो कितुं अपनी रस्मो के लिए वह अपने गाँव जाना अधिक पसंद करता हैं। आज भी अपनी जमीन से जुड़ाव ही उसकी शक्ति व ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोंत हैं। मां, माटी, मानुस, जंगल और जानवर आज भी उसके जीवन के आधारभूत सत्य हैं। आज पूरे विश्व में वैश्विककरण, औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के कारण से आदिवासी समाजों पर बहुत ही गंभीर व आमूलचूल प्रभाव हो रहे हैं। आज उनकी जीवन पद्धति, जमीन, जंगल, जल तथा जानवरो पर खतरा मंडरा रहा हैं। इसके कारण से उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ता जा रहा हैं। एक तरह से निवृंश होने की ओर कतिपय समुदाय बढ़ रहे हैं, तो कपितय अपनी पहचान को बचाये रखने के संकट का सामना कर रहे हैं। पंरपराकेन्द्रित आदिवासी संस्कृति इसी कारण अपने अनेक पक्षों में रूढ़िवादी सी दीख पड़ती हैं उत्तर और दक्षिण अमेरीका, आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्वीपों और द्वीप समूहों में आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

वचन –

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध होता हैं। यह दो प्रकार का होता हैं–एकवचन और बहुवचन। भिलाली और बारेली बोलियों में भी हिन्दी के समान ही एकवचन और बहुवचन होते हैं।

भिलाली –

उरपा भिलाली बोली मुख्य रूप से म.प्र. के खरगोन, बड़वानी, धार, झाबुआ, खण्ड़वा, अलिराजपुर आदि जिलो में बोली जाती हैं। जबकि ढापला भिलाली अर्थात निमाड़ी म.प्र. के पश्चिमी क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण बोली हैं। पूर्व ओर पश्चिम निमाड़ जिसमें खण्डवा, खरगोन,

बड़वानी, धार, हरदा, आदि जिलो में बोली हैं। साथ ही निमाड़ी स्थानीय प्रभाव के साथ ही बोली जाती हैं। इसके साथ ही भिलाली जाति के लोग जो निमाड़ी बोलते हैं। संपूर्ण म.प्र. में बस गये हैं। जिसमें मजदूर, व्यापार, या शासकीय नौकरी करने वाले लोग शामिल हैं। यह कहना अतिसंयोक्ति नहीं होगा कि अपने अंचल से बाहर निमाड़ी को प्रतिष्ठित करने वाले भी यही लोग हैं।

एकवचन –

शब्द के जिस रूप में एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो,जैसे–

उरपा भिलाली	ढापला भिलाली	हिन्दी
पुर्‌यु	छोरो	लड़का
पुरे	छोरी	लड़की
छिंदरो	कपड़ो	कपड़ा
कुकडु	कुकड़ो	मुर्गा

बहुवचन –

शब्द के जिस रूप में एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो,जैसे–

उरपा भिलाली	ढापला भिलाली	हिन्दी
पुर्‌या	छोरा	लड़के
पुरायटा	छोरिया	लड़कियाँ
छिंदरा	कपड़ा	कपड़े
कुकड़ा	कुकड़ा	मुर्गे

1.उरपा भिलाली में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए वाक्य के अंत में ' उकारान्त ' के स्थान पर 'आकारान्त ' हो जाता हैं,जैसे– ''

एकवचन	हिन्दी	बहुवचन	हिन्दी
केवडु	केड़ा	केवड़ा	केड़े
बुकडु	बकरा	बुकड़ा	बकरे
कुकडु	मुर्गा	कुकड़ा	मुर्गे
खादु	खाया	खादा	खाये
घुड़लु	घोड़ा	घुड़ला	घोड़े
चुट्टु	चोर	चुट्टा	चोर
मोटु	बड़ा	मोटला	बड़े
पेहलु	पहला	पेहला	पहले
पुर्‌यु	लड़का	पुर्‌या	लड़के
नाडलु	छोटा	नाडला	छोटे
कोसु	कैसा	कोसा	कैसे

2.उरपा भिलाली बोली में स्त्रीलिंग में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अन्त में प्रायः अकारान्त को आकारान्त करने पर बहुवचन बनता हैं,जैसे–

एकवचन	**हिन्दी**	**बहुवचन**	**हिन्दी**
बोहणीस	बहन	बोहणीस्या	बहनें

3.उरपा भिलाली बोली में ईकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञां शब्दो में अन्त में ई या में बदल जाता हैं,जैसे –

एकवचन	**हिन्दी**	**बहुवचन**	**हिन्दी**
काकी	काकी	काकीयाँ	काकियाँ
नोंदी	नदी	नोंदीयाँ	नदियाँ
वाछड़ी	केड़ी	वाछड़ीयाँ	केड़ियाँ
थावी	थाली	थावीयाँ	थालियाँ

4. ढापला भिलाली बोली में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिये ओकारान्त का आकारान्त हो जाता है,जैसे–''

एकवचन	**हिन्दी**	**बहुवचन**	**हिन्दी**
छोरो	लड़का	छोरा	लड़के
कुकड़ो	मुर्गा	कुकड़ा	मुर्गे
घोड़ो	घोड़ा	घोड़ा	घोड़े
बोकड़ो	बकरा	बोकड़ा	बकरे

बारेली

आदिवासी बारेला की बारेली बोली म.प्र. के खरगोन जिले की भगवानपुरा, झीरन्या, भीकनगाँव तहसील के गाँवों में, बड़वानी जिले की पाटी, सेंधवा, निवाली, पानसेमल, वरला आदि तहसील के गाँवों में तथा देवास जिले की बागली तहसील के गाँवों में तथा महाराष्ट्र के धुलिया जिले की शिरपुर तहसील के गाँवों में, जलगाँव जिले की चोपड़ा तहसील के गाँवों में तथा नन्दूरबार जिले की शाहदा तहसील के गाँवों में बोली जाती हैं।

एकवचन –

राठ्वा बोली	**पाल्या बोली**	**बारला बोली**	**हिन्दी**
पुर्‌यु	छोरो	छुरू	लड़का
पुराय	छोरी	छुरी	लड़की
छिंदरो	छितरू	लुगड़ो	कपड़ा
कुकडु	कुकड़ो	कुकडु	मुर्गा

बहुवचन–

शब्द के जिस रूप में एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, जैसे–

राठ्वा बोली	**पाल्या बोली**	**बारला बोली**	**हिन्दी**
पुर्‌या	छोरा	छुरा	लड़के
पुरायटा	छोरिया	छुरिया	लड़कियाँ
छिंदरा	छितरा	लुगड़ा	कपड़े
कुकड़ा	कुकड़ा	कुकड़ा	मुर्गे

1.बारेली राठ्वा बोली एवं बारला बोली में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए वाक्य के अंत में ' उकारान्त ' के स्थान पर ' आकारान्त ' हो जाता हैं, जैसे– "'

एकवचन	**हिन्दी**	**बहुवचन**	**हिन्दी**
केवडु	केड़ा	केवड़ा	केड़े
बुकडु	बकरा	बुकड़ा	बकरे
कुकडु	मुर्गा	कुकड़ा	मुर्गे
घुड़लु	घोड़ा	घुड़ला	घोड़े
चुट्टु	चोर	चुट्टा	चोर
मोटु	बड़ा	मोटा	बड़े
पेहलु	पहला	पेहला	पहले
पुर्‌यु	लड़का	पुर्‌या	लड़के(राठ्वा)
छुरू	लड़का	छुरा	लड़के (बारला)
नाड़लु	छोटा	नाड़ला	छोटे(राठ्वा)
आयतलु	छोटा	आयमला	छोटे(बारला)
पाहनतर्‌यु	मेहमान	पाहनतर्‌या	मेहमान
कोसु	कैसा	कोसा	कैसे
भालु	भाला	भाला	भाले
कुतरू	कुत्ता	कुतरा	कुत्ते
गोदडु	गधा	गोदड़ा	गधे

2.राठ्वा बोली एवं बारला बोली में स्त्रीलिंग में एकवचन और बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अन्त में प्रायः अकारान्त को आकारान्त करने पर बहुवचन बनता हैं,जैसे–

एकवचन	हिन्दी	बहुवचन	हिन्दी
बेहणीस	बहन	बोहणीस्या	बहने (राठ्वा)
पुराय	लड़की	पुरायटा	लड़कियाँ(राठ्वा)
बायर	पत्नी	बायरा	पत्नियाँ (राठ्वा)
बोणीह	बहन	बोणीहा	बहने (बारला)

3.राठ्वा बोली पाल्या बोली एवं बारला बोली में ईकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञां शब्दो के अन्त में ' ई ' को या में बदलकर बहुवचन बनाया जाता हैं, जैसे–

एकवचन	हिन्दी	बहुवचन	हिन्दी
काकी	काकी	काकीया	काकियाँ
छुरी	लड़की	छुरिया	लडकियाँ
नोंदी	नदी	नोंदीया	नदियाँ
थावी	थाली	थावीया	थालियाँ

4.बारेली पाल्या बोली मे ' ओकारान्त ' को ' आकारान्त ' में बदलकर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता हैं,जैसे–''

एकवचन	हिन्दी	बहुवचन	हिन्दी
केतलो	कहता	केतला	कहते
बोकड़ो	बकरा	बोकड़ा	बकरे
कुकड़ो	मुर्गा	कुकड़ा	मुर्गे
डबड़ो	डब्बा	डबड़ा	डब्बे
घोड़ो	घोडा	घोड़ा	घोड़े
उगंवलो	नहाया	उगंवला	नहाये
ठोकतलो	मारता	ठोकतला	मारते
बेहतलो	बैठता	बेहतला	बैठते

आवतलो	आता	आवतला	आते
वारलो	अच्छा	वारला	अच्छे
बीजो	दूसरा	बीजा	दूसरे
अमथो	ऐसा	अमथा	ऐसे
उठतलो	उठता	उठमला	उठते
जागतलो	जागता	जागतला	जागते
केकड़ो	केकड़ा	केकड़ा	केकड़े
मांगतलो	मांगता	मांगतला	मांगते
देखतलो	देखना	देखतला	देखने
गदड़ो	गधा	गदड़ा	गधे

5.बारेली पाल्या बोली मे ' उकारान्त ' को ' आकारान्त ' में बदलकर एकवचन से बहुवचन बनाया जाता हैं,जैसे–

एकवचन	**हिन्दी**	**बहुवचन**	**हिन्दी**
मोडु	मुँह	मोडा	बहुत से मुँह
केवु	कहना	केवा	कहने
जवु	जाना	जवा	जाने
मेलवु	रखना	मेलवा	रखने
पेरवु	पहनना	पेरवा	पहनने
पुछ्वु	पुछना	पुछवा	पुछने
ईटडु	ईट	ईटड़ा	ईटे
तावु	ताला	तावा	ताले

निष्कर्ष –

आदिवासी भाषा की अपनी विशेषता हैं कि इनमें प्रयुक्त शब्द के प्रकार में अधिकांश ध्वन्यात्मक हैं। उदाहरण के लिए कुकड़ी और कुकड़ो याने मुर्गी व मुर्गा। किंतु हिन्दी भाषा के प्रभाव से अब इन शब्दों के साथ मुर्गी व मुर्गा शब्द ने भी प्रवेष कर लिया हैं, हिन्दीकरण से मूल शब्द की प्रोक्ति पहचान लुप्त होती जा रही हैं, हिन्दी सिविलाईजेशन के प्रभाव से भाषा की मूल पहचान के ही विकृत होने या लुप्त होने का आसन्न उत्पन्न हो गया हैं। आदिवासी भिलाला एवं बारेला की बोलियों के अपने कुछ नियम है, जिसे संरक्षित एवं सुरक्षित रखना अतिआवश्यक है।

'' एकवचन से बहुवचन बनाने में ढापला भिलाली एवं पाल्या बारेली दोनो ही बोलियों में ' ओकारान्त ' का ' आकारान्त ' हो जाता हैं।

''' एकवचन से बहुवचन बनाने में उरपा भिलाली बोली एवं बारेली राठवा बोली एवं बारला बोली दोनो में ही ' उकारान्त ' का ' आकारान्त ' हो जाता हैं।

यह शोध पत्र साक्षात्कार पर आधारित तथा पुर्णतः मौलिक है।

संदर्भः–

1. डॉ. प्रकाश सोलंकी ,शास.होल्कर विज्ञान महावि.इन्दौर म.प्र.
2. सुरक्षा आर्य ग्राम कुंजरी जिला बड़वानी म.प्र.
3. शिवराम बन्डोड़ ग्राम सालीकला तह. राजपुर जिला बड़वानी म.प्र.
4. खजान सोलंकी ग्राम चाटली तह. निवाली जिला बड़वानी म.प्र.
5. टी. आर. डावर प्राचार्य शास.उ.मा.वि. महू जिला इन्दौर म.प्र.
6. डॉ. यशोदा चौहान पानसेमल जिला बड़वानी म.प्र.
7. गंगाराम जाधव ग्राम सावरियापानी जिला बड़वानी म.प्र.
8. गोसा पेंटर ग्राम आडगाँव जिला नंदूरबार महाराष्ट्र
9. सेवाराम सोलंकी सनावद जिला खरगोन म.प्र.
10. डॉ के.एस. सोलंकी सेंधवा जिला बड़वानी म.प्र.
11. कमली मोरे ग्राम झापड़ीपाडला जिला बड़वानी म.प्र.